डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय

अवध अभिव्यक्ति

विश्वविद्यालय की ई–मासिक पत्रिका

15, सितम्बर, 2020
वर्षः 03, अंक–11

सहज और सरल अभिव्यक्ति मातृभाषा हिन्दी में ही हो सकती हैः कुलपति 03

नई शिक्षा नीति की स्वीकार्यता के लिए सामूहिक प्रयास करना होगाः डॉ0 नीलिमा 04

नई शिक्षा नीति का प्रमुख लक्ष्य राष्ट्र निर्माण हैः शिक्षा मंत्री

28 अगस्त। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय एवं स्टूडेंटस फॉर होलिस्टिक डेवलपमेंट इन ह्यूमैनिटी के संयुक्त संयोजन में नई शिक्षा नीतिः सम्भावनाएं और चुनौतियां विषय पर दो दिवसीय(27–28 अगस्त 2020) राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। समापन सत्र को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि भारत सरकार के शिक्षा राज्यमंत्री संजय धोत्रे ने कहा कि स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता का स्तर ठीक करना वर्तमान परिवेश की आवश्यकता है। शिक्षा का मूल्य उद्देश्य अज्ञानता के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर जाना होता है। शिक्षा एक ऐसा विषय है जिससे भारत का प्रत्येक परिवार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। उन्होंने बताया कि देश के प्रधानमंत्री एवं मानव संसाधन मंत्री के नेतृत्व में आज भारत को नई शिक्षा नीति मिली है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में बदलाव की शुरूआत इस नीति से हुई है, जो भारत को नई ऊंचाई पर ले जायेगी। राष्ट्रीय नई शिक्षा नीति का प्रमुख लक्ष्य राष्ट्र निर्माण है । उन्होंने कहा कि शिक्षा की सार्थकता तभी होगी जब छात्रों का सर्वांगीण विकास हो और जिस क्षेत्र में वे कार्य करना चाहते है उसका ज्ञान और कौशल उनके पास हो। विश्वस्तरीय शिक्षा की गुणवत्ता के लिए सरकार प्रतिबद्ध है।

समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि नई शिक्षा नीति राष्ट्रीय महत्व का विषय है। शिक्षाविदों ने काफी मंथन के बाद यह नीति तैयार की है। भारतीय सामाजिक मान्यताओं एवं मूल्यों के अनुरूप आत्मनिर्भर भारत की तरफ देश का प्रत्येक नागरिक आगे बढ़े यही नई शिक्षा नीति का उद्देश्य है। इस नीति को लेकर जनमानस जिज्ञासु एवं संवेदनशील है। कुलपति ने कहा कि इस नई शिक्षा नीति के अनुरूप अपनी शैक्षिक कियाकलापों और शोध कार्यों को आगे बढ़ाते हुए हमें आज के भारत को आत्मनिर्भर बनाते हुए अपना सार्थक योगदान देना है। प्रो0 सिंह ने कहा कि भारत की शिक्षा नीति विश्वस्तर की प्रतियोगिता में खरी उतरे इसके लिए हम सभी की सकिय भागीदारी आवश्यक है।

समापन सत्र के पूर्व तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया। तकनीकी सत्र को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ड्राफ्टिंग कमेटी के सदस्य अनुराग बेहर ने कहा कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की अन्तर्निहित भावना को समझना होगा। इसमें एकीकरण को सर्वाधिक महत्ता दी गई है, जो शिक्षा के उद्देश्यों को पूरा करती है। मानवीय गुणों पर बल दिया गया है। उन्होंने बताया कि किसी संस्थान की संस्कृति, वहां पर शिक्षा का वातावरण देश में शिक्षा की संस्कृति को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते है। यह नीति निःसंदेह अद्वितीय है। धर्मशास्त्र राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, जबलपुर के कुलपति प्रो0 बलराज चौहान ने कहा कि नई शिक्षा नीति निश्चित रूप से भारत के भविष्य के निर्माण में प्रत्यक्ष रूप से सहायक होगी। यह नीति शिक्षा के क्षेत्र में एक निर्णायक कदम है। उन्होंने बताया कि यह नीति विद्यार्थियों के स्पष्ट रूप से सोचने की क्षमता पर अपना ध्यान केन्द्रित करती है। इस नीति में शिक्षण संस्थाओं को अधिक शक्तियां प्रदान की गई है। अंत में उन्होंने कहा कि भारतीय शिक्षा के इतिहास में यह अबतक के भारत की सबसे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा नीति साबित होगी।

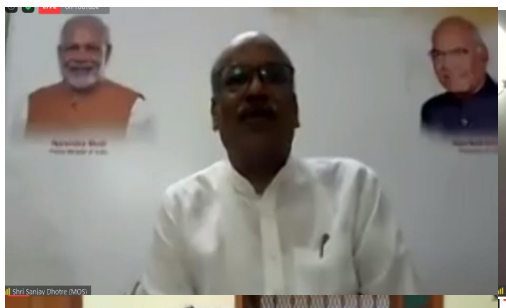

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के पूर्व निदेशक प्रो0 लक्ष्मण सिंह राठौर, ने कहा कि नीतियां तो बनती रहती है लेकिन उनका कियान्वयन किस प्रकार हो, यह आवश्यक है। उन्होंने नई शिक्षा नीति के कई पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पुरातन शैक्षिक व्यवस्था को पुर्नस्थापित करना इस नीति का उद्देश्य है। इस नीति में गुणवत्ता पर विशेष जोर दिया गया है। शिक्षा व्यवस्था सम्पूर्ण होने के साथ–साथ लचीली भी होनी चाहिए। इसमें ज्ञान के विकास पर जोर दिया गया है। मदन मोहन मालवीय तकनीकी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो0 एस0एन0 सिंह ने कहा कि पिछली लगभग सभी शिक्षा नीतियों में परीक्षा प्रणाली थोड़ी भ्रामक रही है, जो विद्यार्थियों में चिन्ता का एक बड़ा कारण है। लेकिन इस नई शिक्षा नीति में जिस प्रकार शिक्षा का सामान्यीकरण किया गया है उससे निःसंदेह भ्रांतियां दूर होंगी। उन्होंने बताया कि वर्तमान में इस नई शिक्षा नीति को लागू करना अवश्य ही एक बड़ी चुनौती है। इस नीति से उद्यमिता के क्षेत्र को बढ़ावा मिलेगा जिससे आत्मनिर्भर भारत का सपना साकार होगा।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के डॉ0 अंशु जोशी ने कहा कि पिछले 34 वर्षों से जो भारतीय शिक्षा प्रणाली चली आ रही थी, उसमें आमूलचूल परिवर्तन करते हुए नई शिक्षा नीति हमारे सामने है। उन्होंने कहा कि एक समय था जब भारत की शिक्षा प्रणाली नैतिक मूल्यों के मजबूत स्तम्भ पर खड़ी थी। अंको के बजाय ज्ञान पर आधारित थी। नई शिक्षा नीति–2020 में एक बार फिर भारत को विश्वगुरू बनाने के प्रयास का बिगुल बजा दिया है। यह अत्यन्त लचीली एवं बहुआयामी है। शिक्षा के सर्वांगीण विकास और भारतीय संस्कृति के साथ आने वाले भविष्य की रूपरेखा पर यह नीति निर्धारित है। लखनऊ विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान के प्रो0 आर0के0 मिश्र ने कहा कि इस शिक्षा नीति में किए गये परिवर्तन अत्यन्त उत्साहजनक है। परन्तु यह नीति केवल दिवास्वप्न बनकर न रह जाये इसके लिए आवश्यक है कि इन नीतियों का उचित कियान्वयन हो। इसमें राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। राजनैतिक विचारधाराओं को अलग रखकर राष्ट्र के हित में निर्णय लिया जाये। अंत में कहा कि इसमें नवीनतम बात यह कि कुछ श्रेष्ठ भारतीय विश्वविद्यालयों के कैम्पस विदेशों में और कुछ विदेशी विश्वविद्यालयों के कैम्पस भारत में स्थापित किए जाएंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, एम0एच0आर0डी0 के सलाहकार डॉ0 रामानन्दन पाण्डेय ने कहा कि कोई नीति कितनी जन हित में हो उसका निर्धारण इस बात से किया जा सकता है कि समाज स्वयं को उस नीति से जोड़ने में कितना सक्षम है। इसमें मातृ भाषा को बढ़ावा दिया गया है। उन्होंने कहा कि हम सदैव ब्रिटिश एवं अन्य यूरोपीय देशों की शिक्षा नीतियों का उदाहरण देते और अनुसरण करते आये है।

वेबिनार के संयोजक प्रो0 एस0एन0 शुक्ल ने बताया कि दो दिवसीय वेबिनार में नई शिक्षा नीति पर शिक्षाविद्वों का जमावड़ा रहा है। इसमें नई शिक्षा नीति पर विद्वानों द्वारा संभावनाओं और चुनौतियों पर मंथन हुआ। आने वाले समय में इसके सुखद परिणाम दिखाई देंगे। कार्यकम का शुभारम्भ कुलगीत से हुआ। स्वागत और कार्यकम की रूपरेखा सहसंयोजक प्रो0 शैलेन्द्र कुमार वर्मा द्वारा प्रस्तुत की गयी। स्टूडेंटस फॉर होलिस्टिक डेवलपमेंट इन ह्यूमैनिटी के डॉ0 अमित कुशवाहा ने संक्षिप्त जानकारी दी। कार्यकम का संचालन करते हुए आयोजन सचिव डॉ0 गीतिका श्रीवास्तव ने कार्यकम की रिपोर्टियर प्रस्तुत की। धन्यवाद ज्ञापन सहसंयोजक प्रो0 रमापति मिश्र द्वारा किया गया। तकनीकी सहयोग मनीषा यादव, पारितोष त्रिपाठी, राजीव कुमार, रमेश मिश्र ने प्रदान किया। इस अवसर पर कुलसचिव उमानाथ, डॉ0 प्रदीप खरे, डॉ0 त्रिवेणी सिंह, प्रो0 फारूख जमाल सहित बड़ी संख्या में प्रतिभागी ऑनलाइन जुड़े रहे।

सर्वांगीण और सर्वोत्कृष्ट विकास का मूल आधार है शिक्षाः कुलपति

08 सितम्बर । नई शिक्षा नीति–2020 पर डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने बताया कि उच्च शिक्षा पर पड़ने वाले व्यापक बदलाव के कम में राष्ट्रीय शिक्षा नीति विशेषज्ञों के व्यापक परामर्श के उपरांत तैयार की गई है। शिक्षा के संदर्भ में कुलपति ने कहा कि मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण और सर्वोत्कृष्ट विकास का मूल आधार शिक्षा है। नई शिक्षा नीति को अपनाने का उद्देश्य राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक को सक्षम बनाना है। राष्ट्रीय संदर्भ में यही सपना महात्मा गांधी और स्वामी विवेकानंद ने भी देखा था। शिक्षा का अर्थ समाज में निरन्तर चलने वाली सामाजिक प्रकिया है। शिक्षा से ही ज्ञान और कौशल में वृद्धि कर मनुष्य को योग्य बनाया जाता है।

कुलपति प्रो0 सिंह ने बताया कि नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत केन्द्र व राज्य सरकार के सहयोग से शिक्षा के क्षेत्र पर जीडीपी के 6 प्रतिशत हिस्से के सार्वजनिक व्यय का लक्ष्य रखा गया है। नई शिक्षा नीति में मातृभाषा, स्थानीय एवं क्षेत्रीय भाषा को अध्ययन के माध्यम के रूप में अपनाने पर बल दिया गया है।

कुलपति ने कहा कि स्कूली और उच्च शिक्षा में छात्रों के लिए संस्कृत एवं प्राचीन भाषाओं का विकल्प होगा। नई शिक्षा नीति में पाठ्यकम व पाठ्येत्तर गतिविधियों के बीच का अन्तर कम करने का सुझाव है। साथ ही व्यवसायिक शिक्षा में प्रारम्भिक स्तर से इन्टर्नशिप की व्यवस्था की गई है। छात्रों की प्रगति के मूल्यांकन तथा उनके भविष्य से जुड़े निर्णय लेने में सहायता प्रदान करने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस पर आधारित साफ्टवेयर के प्रयोग का सुझाव है।

कुलपति प्रो0 सिंह ने बताया कि नई शिक्षा नीति–2020 में देशभर के उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए एक एकल नियामक भारतीय उच्च शिक्षा परिषद् की परिकल्पना की गई है। भारतीय उच्च शिक्षा जगत में, चिकित्सा एवं कानूनी शिक्षा को छोड़कर पूरे उच्च शिक्षा क्षेत्र के लिए एक निकाय के रूप में परिषद् कार्य करेगी। कुलपति प्रो0 सिंह ने बताया कि नई शिक्षा नीति में राष्ट्रीय प्रत्यायन परिषद् मुख्य रूप से बुनियादी मापदण्डों, सार्वजनिक स्वप्रकटीकरण, सुशासन और परिणामों पर आधारित होगा।

प्रो0 सिंह ने बताया कि देशभर के आई0आई0टी0 एवं आई0आई0एम0 के समकक्ष वैश्विक मानकों के बहुविषयक शिक्षा एवं अनुसंधान विश्वविद्यालय (मेरू) की स्थापना की जायेगी। दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए उच्च प्रौद्योगिकी आधारित प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना का प्रावधान नई शिक्षा नीति में किया गया है।

कुलपति प्रो0 सिंह ने बताया कि नई शिक्षा नीति ज्ञान, कौशल एवं सामाजिक मूल्यों को विकसित करने की आधारशिला बनेगी। नई शिक्षा नीति के प्रमुख बिन्दुओं में सभी उच्च शिक्षण संस्थानों को बहुविषयक संस्थान बनाने पर जोर दिया गया है। इसके तहत लगभग प्रत्येक जिले में 2030 तक एक बड़ी बहुविषयक संस्था स्थापित की जायेगी।

उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति में भारत को ज्ञान का केन्द्र बनाने की दिशा में एक प्रभावी कदम है। शिक्षा नीति में नवाचार एवं अनुसंधान जैसे महत्वपूर्ण बिन्दुओं को केन्द्रित किया गया है।

कुलपति प्रो0 सिंह ने बताया कि वर्ष 2035 तक व्यावसायिक शिक्षा सहित उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात 26.3 से बढ़ाकर 50 प्रतिशत करने का लक्ष्य रखा गया है। एकल विषय के शिक्षण संस्थानों को समय के साथ चरणबद्ध तरीके से बहुविषयक बनाने की योजना है। आई0आई0टी0 जैसे संस्थान टेक्नॉलॉजी के साथ कला और मानविकी को लेकर समग्र और बहुविषयक शिक्षा की ओर बढ़ेंगे।

कुलपति ने बताया कि एक एकेडमी बैंक ऑफ केडिट(ए0बी0सी0) स्थापित किया जायेगा जो अर्जित किए गए एकेडमिक केडिट को डिजिटल रूप में संग्रहीत करेगा। प्रो0 सिंह ने बताया कि उच्च प्रदर्शन करने वाले भारतीय विश्वविद्यालयों को अन्य देशों के परिसर में स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया जायेगा। दुनिया के शीर्ष 100 विश्वविद्यालयों में से चयनित विश्वविद्यालयों को देश में शिक्षण कार्य की सुविधा प्रदान की जायेगी। प्रत्येक शिक्षण संस्थान में तनाव व भावनात्मक समायोजन से निपटने के लिए परामर्श प्रणाली विकसित की जायेगी।

मंथन

15 सितम्बर, 2020:आश्विन, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी, विक्रम संवत् 2077

"धैर्य महान बनने की पहली सीढ़ी है।"

स्वच्छता और स्वास्थ्य

वर्तमान में कोरोना महामारी के दौर में स्वच्छता और स्वास्थ्य के प्रति ज्यादा सचेत रहने की जरुरत है। संक्रमण को रोकने के लिये स्वच्छता एवं स्वास्थ्य अत्यंत आवश्यक है। सुरक्षित स्वच्छता प्रणालियों की कमी के कारण संक्रमण और बीमारियाँ होती हैं,। सुरक्षित स्वच्छता प्रणालियों की कमी रोगाणुरोधी प्रतिरोध के उद्भव तथा प्रसार में योगदान करती है। सभी के लिये जल एवं स्वच्छता की उपलब्धता तथा स्थायी प्रबंधन सुनिश्चित करना एक बड़ी चुनौती है। संपूर्ण स्वच्छता सेवा श्रृंखला के साथ सुरक्षित प्रणालियों तक सार्वभौमिक पहुँच सुनिश्चित करना होगा। यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि प्रणाली एवं सेवाएँ स्थानीय संदर्भ में कार्य करने हेतु चुनी जाएँ तथा निवेश एवं प्रणाली प्रबंधन स्थानीय स्तर के जोखिम आकलनों पर आधारित हो। स्वच्छता सेवाएँ प्राप्त करने के लिये स्वच्छता प्रणालियों को सफाई, ढुलाई, उपचार और निपटान का समुचित प्रबंध करना होगा। स्वच्छता हस्तक्षेप को जल एवं अन्य स्वच्छता उपायों के साथ समन्वित किया जाना चाहिये, साथ ही स्वच्छता से होने वाले स्वास्थ्य लाभों को अधिकतम करने के लिये आमजन को जागरूक करना होगा। वस्तुतः स्वच्छता एक प्राथमिक बाधा है, किंतु द्वितीयक बाधाएँ जैसे– सुरक्षित जल, साबुन से हाथ धोना, पशु अपशिष्ट प्रबंधन तथा मच्छर–मक्खी नियंत्रण पर भी ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। स्वच्छ भारत अभियान का उद्देश्य केवल आसपास की सफाई करना ही नहीं है अपितु नागरिकों की सहभागिता से अधिक से अधिक पेड़ लगाना, कचरा मुक्त वातावरण बनाना, शौचालय की सुविधा उपलब्ध कराकर एक स्वच्छ भारत का निर्माण करना है। देश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए स्वच्छ भारत का निर्माण करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। अस्वच्छ भारत की तस्वीरें भारतीयों के लिए अक्सर शर्मिंदगी की वजह बन जाती है इसलिए स्वच्छ भारत के निर्माण एवं देश की छवि सुधारने का यह सही समय एवं अवसर है। यह अभियान न केवल नागरिकों को स्वच्छता संबंधी आदतें अपनाने बल्कि हमारे देश की छवि स्वच्छता के लिए तत्परता से काम कर रहे देश के रूप में बनाने में भी मदद करेगा। भारत सरकार स्वच्छता पर ज्यादा जोर दे रही है जिससे भारत को स्वच्छ व स्वस्थ और रोग मुक्त बनाया जा सके। भारत में स्वच्छता अभियान सर्वेक्षण में मध्य–प्रदेश के इंदौर जिले को लगातार चौथे वर्ष भारत का सबसे स्वच्छ शहर घोषित किया गया है। सर्वेक्षण में दूसरा स्थान सूरत और तीसरा स्थान नवी मुम्बई को मिला है। पिछले दशकों में सरकारी–गैरसरकारी स्वास्थ्य चेतना के कारण भारत में जीवन प्रत्याशा में बढ़ोतरी हुई है। औसत जीवन प्रत्याशा दर में वृद्धि भारत सरकार द्वारा सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में लगातार निवेश का परिणाम है।

आधुनिक भारत के शिल्पकार हैं विश्वेश्वरैया

साक्षी श्रीवास्तव

भारत में प्रतिवर्ष 15 सितंबर को अभियन्ता दिवस (इंजीनियर्स डे) मनाया जाता है। 15 सितम्बर 1860 को मैसूर रियासत में भारत के महान अभियन्ता एवं भारतरत्न मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया का जन्म हुआ था, जो आज का कर्नाटक राज्य है। इनके पिता श्रीनिवास शास्त्री संस्कृत भाषा के विद्वान और आयुर्वेद चिकित्सक थे। इनकी माता वेंकचम्मा एक धार्मिक महिला थी। जब विश्वेश्वरैया 15 साल के थे, तब उनके पिता का देहांत हो गया था। चिकबल्लापुर में इनकी प्राथमिक शिक्षा–दीक्षा हुई, आगे की पढाई के लिए वे बंगलुरू चले गए। 1881 में विश्वेश्वरैया ने मद्रास यूनिवर्सिटी के सेंट्रल कॉलेज, बंगलुरू से बीए की परीक्षा पास की। इसके बाद मैसूर सरकार से उन्हें आर्थिक मदद मिली और उन्होंने पूना के साइंस कॉलेज में इंजीनियरिंग के लिए दाखिला लिया। मेधावी विश्वेश्वरैया ने इंजीनियरिंग की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

इंजीनियरिंग पास करने के बाद विश्वेश्वरैया को बॉम्बे प्रेसीडेंन्सी की सरकार की तरफ से नौकरी का प्रस्ताव आया और उन्हें नासिक में सहायक अभियन्ता के तौर पर काम मिला। एक इंजीनियर के रूप में उन्होंने बहुत से अद्भुत काम किए। उन्होंने सिन्धु नदी से पानी की आपूर्ति सुक्कुर गाँव तक करवाई, साथ ही एक नई सिंचाई प्रणाली 'ब्लाक सिस्टम' को शुरू किया। इन्होंने बाँध में स्टील के दरवाजे लगवाए, ताकि बाँध के पानी के प्रवाह को आसानी से रोका जा सके।

विश्वेश्वरैया ने 1903 में पुणे के खड़कवासला जलाशय में बाँध बनवाया, इसके दरवाजे ऐसे थे जो बाढ़ के दबाब को भी झेल सकते थे और इससे बाँध को भी कोई नुकसान नहीं पहुँचता था। इस बांध की सफलता के बाद ग्वालियर में तिगरा बांध एवं कर्नाटक के मैसूर में कृष्णराज सागर का निर्माण किया गया। कावेरी नदी पर बने कृष्णराज सागर को विश्वेश्वरैया ने अपनी देख रेख में बनवाया था। 1906 में भारत सरकार ने उन्हें जल आपूर्ति और जल निकासी व्यवस्था के लिए 'अदन' भेजा। उनके द्वारा बनाए गए प्रोजेक्ट को अदन में सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया गया। हैदराबाद सिटी को बनाने का पूरा श्रेय विश्वेश्वरैया को ही जाता है। उन्होंने वहां एक बाढ़ सुरक्षा प्रणाली तैयार की, जिसके बाद समस्त भारत में उनका नाम हो गया। उन्होंने समुद्र कटाव से विशाखापत्तनम बंदरगाह की रक्षा के लिए एक प्रणाली विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। विश्वेश्वरैया को मॉडर्न मैसूर स्टेट का पिता कहा जाता है।

जन–अभिव्यक्ति

ई–मासिक पत्रिका अवध अभिव्यक्ति से विश्वविद्यालय परिसर की गतिविधियों की जानकारी मिलती है। रक्षाबंधन और कृष्ण जन्माष्टमी पर लेख रूचिकर लगे।

–अभिषेक गुप्ता

मानव मूल्यों को समर्पित थी महात्मा गांधी की पत्रकारिता

सौरभ सिंह

सभ्य समाज में राजनीति और पत्रकारिता का अटूट सम्बंध है। भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में सेनानियों ने पत्रकारिता के माध्यम से जनजागृति के दायित्व का निर्वहन किया। भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के सूत्रधार और भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने भी अपने विचारों को समाचार–पत्रों के माध्यम से जन–जन तक पहुंचाया।

महात्मा गाँधी के दृष्टिकोण में पत्रकारिता ऐसी सेवा है, जो आजीविका का साधन नहीं होनी चाहिए। महात्मा गाँधी के अनुसार "पत्रकारिता कभी भी निजी हित या आजीविका कमाने का जरिया नहीं बननी चाहिए। अखबार या सम्पादक, चाहे जो भी हो जाए, उसे अपने देश के विचारों को सामने रखना चाहिए। इसके नतीजे चाहे जो भी हों, यदि उन्हें जनमानस के हृदय में जगह बनानी है तो उन्हें एक अलग धारा का सूत्रपात करना होगा"।

राष्ट्रपिता अपने अखबारों में विज्ञापनों से परहेज रखते थे। लगभग तीस वर्षों तक उन्होंने बिना विज्ञापन के ही अखबारों और पत्र–पत्रिकाओं का सम्पादन किया। अखबारों में विज्ञापन के प्रति उनका नजरिया था कि यदि विज्ञापनों की अधिकता होगी तो सम्पादक को अपने विचारों की अभिव्यक्ति और खबरों के लिए कम स्थान मिलेगा। गाँधी के अनुसार विज्ञापन के रूप में केवल उन्हीं सामग्रियों का प्रकाशन होना चाहिए जो प्रत्यक्ष और जनहित से सम्बन्धित हो।

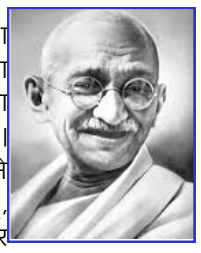

महात्मा गाँधी ने एक लम्बा वक्त पत्रकारिता को समर्पित किया। वे मुख्य रूप से हिन्दी, उर्दू, गुजराती और अंग्रेजी भाषाओं में लेख लिखते थे। उन्होंने दर्जनों पत्र–पत्रिकाओं और समाचारपत्रों का सम्पादन किया, जिनमें इंडियन ओपिनियन, यंग इंडिया, नवजीवन, हरिजन प्रमुख हैं। 'नवजीवन' हिन्दी और गुजराती दो भाषाओं में प्रकाशित होती थी। 'हरिजन' का प्रकाशन महात्मा गांधी ने जेल में रहते हुए किया था। शुरूआती तीन माह के लिए 'हरिजन' की 10000 प्रतियाँ प्रकाशित करने का लक्ष्य रखा गया था। 'हरिजन' आम जनमानस में अत्यधिक लोकप्रिय हुई। 'हरिजन' मुख्य रूप से हिन्दी, उर्दू, गुजराती, तमिल, तेलगू, उड़िया, मराठी, कन्नड़ और बांग्ला भाषाओं में प्रकाशित होती थी।

गाँधी ने अपने लेखों को प्रमुख रूप से सत्याग्रह, अहिंसा, खानपान, प्राकृतिक चिकित्सा, हिन्दू–मुस्लिम एकता, अस्पृश्यता, खादी, ग्राम स्वराज और स्वदेशी पर केन्द्रित रखा। उन्होंने अंग्रेजी सरकार के प्रतिबन्ध को कभी नहीं माना। यदि उन्हें उनके मनचाहे विषय पर लिखने से रोका जाता था, तो वे लिखना ही बन्द कर देते थे। गाँधी का मानना था कि लेख के विषय ऐसे होने चाहिए जो आम जन से सम्बन्धित हों और उन्हें प्रभावित करें। गाँधी ने स्वलिखित पहली पुस्तक की ही भाषा–शैली ऐसी रखी है, जैसे वह एक पुस्तक नहीं बल्कि पाठक और लेखक का वार्तालाप हो। अपनी किताबों में महात्मा गाँधी ने आत्म. संवाद पर भी बल दिया है।

मीडिया के उत्तरदायित्व को लेकर गाँधी जी का अत्यन्त स्पष्ट विचार था। उनका कहना था "मीडिया यदि प्रश्न नहीं पूछेगा तो क्या करेगा? लोकतान्त्रिक व्यवस्था जवाबदेही की बुनियाद पर कायम है। अतः शासन और सरकारें यदि जवाब नहीं देंगी तो क्या करेंगी? महात्मा गाँधी के विचार युगों–युगों तक शाश्वत रहेंगे। इस बात में कोई दो राय नहीं है कि पत्रकारिता के क्षेत्र में भी यदि उनके पदचिन्हों का अनुसरण किया जाए तो एक सभ्य, सुव्यवस्थित और शान्तिपूर्ण राष्ट्र विकसित होगा।

जन आंदोलन के प्रणेता हैं जयप्रकाश नारायण

रजनीश पाण्डेय

भारतीय स्वतंत्रता सेनानी और प्रख्यात राजनेता जयप्रकाश नारायण का देश में आजादी की लड़ाई से लेकर वर्ष 1977 तक तमाम आंदोलनों में प्रमुख योगदान रहा है। उन्हें जेपी के नाम से भी जाना जाता है। जेपी को मुख्यतः पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के विरोध के लिए जाना जाता था। उनके आंदोलन की वजह से इंदिरा गांधी के हाथ से सत्ता चली गई थी। लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने भारतीय जनमानस पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। जयप्रकाश का समाजवाद का नारा आज भी गूंज रहा है। देश की आजादी के लिए स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हुए जेपी को अनेकानेक परेशानियों का सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने अंग्रेजों के सामने घुटने नहीं टेके।

लोकनायक जयप्रकाश नारायण का जन्म 11 अक्टूबर 1902 में बिहार के सिताबदियारा में हुआ था। जयप्रकाश नारायण राष्ट्रवादी थे और उन्होंने जलियांवाला बाग नरसंहार के विरोध में ब्रिटिश शैली के स्कूल को छोड़कर बिहार विद्यापीठ से अपनी उच्चशिक्षा पूरी की। जयप्रकाश ने समाजशास्त्र से एम० ए० किया। उन्होंने अमेरिकी विश्वविद्यालय में आठ वर्ष तक अध्ययन किया। अमेरिका से वापस आने के बाद उनका संपर्क महात्मा गांधी के साथ काम कर रहे जवाहर लाल नेहरु से हुआ। वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का हिस्सा बने। 1932 में गांधी, नेहरु और अन्य महत्त्वपूर्ण कांग्रेसी नेताओं के जेल जाने के बाद, उन्होंने भारत में अलग–अलग हिस्सों में स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व किया। अन्ततः उन्हें भी मद्रास में सितम्बर 1932 में गिरफ्तार कर लिया गया और नासिक के जेल में भेज दिया गया। 1939 में उन्होंने द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान, अंग्रेज सरकार के खिलाफ लोक आन्दोलन का नेतृत्व किया। उन्होंने सरकार को किराया न देने और राजस्व रोकने के लिए अभियान चलाए। टाटा स्टील कम्पनी में हड़ताल कराके यह प्रयास किया कि अंग्रेजों को इस्पात न पहुंचे। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और 9 महीने की कैद की सजा सुनाई गयी। 1948 में उन्होंने कांग्रेस के समाजवादी दल का नेतृत्व किया और बाद में गांधीवादी दल के साथ मिलकर समाजवादी सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना की।

1960 के दशक के अंतिम भाग में वे राजनीति में पुनः सक्रिय रहे। 1974 में बिहार में किसानों के आन्दोलन में उन्होंने तत्कालीन राज्य सरकार से इस्तीफे की मांग की। वे इंदिरा गांधी की प्रशासनिक नीतियों के विरुद्ध थे। 1975 में इंदिरा गांधी ने आपातकाल की घोषणा की, जिसके अन्तर्गत जेपी सहित 600 से भी अधिक विरोधी नेताओं को बन्दी बनाया गया और प्रेस पर सेंसरशिप लगा दी गयी। 1977 में जेपी के प्रयासों से एकजुट विपक्ष ने इंदिरा गांधी को चुनाव में हरा दिया। अपने जीवन में संतों के जैसा जीवन केवल दो नेताओं ने प्राप्त किया। एक महात्मा गांधी थे, तो दूसरे जयप्रकाश नारायण। इसलिए जब सक्रिय राजनीति से दूर रहने के बाद वे 1974 में 'सिंहासन खाली करो, जनता आती है' के नारे के साथ वे मैदान में उतरे, तो सारा देश उनके पीछे चल पड़ा, जैसे किसी संत महात्मा के पीछे।

सुविचार

विनम्रता के बिना सेवा स्वार्थ और अहंकार है।

–महात्मा गांधी

आप सुधी पाठकों के विचार सादर आमंत्रित हैं।

avadhabhivyakti@gmail.com

प्रमुख संरक्षक
प्रो० रवि शंकर सिंह, कुलपति
संरक्षक
डॉ० विजयेन्दु चतुर्वेदी, समन्वयक
प्रकाशक
श्री उमानाथ, कुलसचिव
सम्पादक मण्डल
डॉ० राजेश सिंह कुशवाहा
डॉ० अनिल कुमार विश्वा
डॉ० राज नारायण पाण्डेय
संकलन एवं सम्पादन
रजनीश, सौरभ एवं साक्षी

Feedback

avadhabhivyakti@gmail.com

डिस्क्लेमर : ई–पत्रिका का प्रकाशन पूरी तरह से शैक्षणिक विकास को समर्पित है, इसका कोई भी व्यावसायिक हित नहीं है। सर्वाधिकार @ डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या।

सहज और सरल अभिव्यक्ति मातृभाषा हिन्दी में ही हो सकती हैः कुलपति

14 सितम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के प्रचेता भवन में स्थित हिंदी भाषा एवं साहित्य विभाग द्वारा हिंदी दिवस पर "हिंदी भाषा और सामाजिक समरसता" विषय पर विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि 'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कै मूल'. अपनी अभिव्यक्ति मातृभाषा में ही हो सकती है। हमारी अभिव्यक्ति सरल, सहज, सबको प्रिय हो, वह अभिव्यक्ति मातृभाषा में हो सकती है। भारतेंदु जी का यह कथन ''निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल ''इसी संकल्प को जागृत करता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने जिस विचार दर्शन पर विविध भाषाओं वाले भारत देश को स्वाधीनता संग्राम की अक्षय चेतना प्रदान की उसमें हिंदी को देशप्रेम का सर्वाधिक प्रभावी माध्यम माना था। यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि स्वाधीनता संग्राम के दौर में अन्य अनेक महापुरुषों ने जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं थी, ने भी हिंदी को सर्वाधिक सम्मान देने के प्रति संकल्प व्यक्त किया था। नेता जी सुभाष चंद्र बोस ,स्वामी दयानंद सरस्वती, बालगंगाधर तिलक, काका कालेलकर, ईश्वर चंद्र विद्यासागर तथा चक्रवर्ती राजगोपालाचारी आदि ने हिन्दी के दूरगामी महत्व को समझा और देशवासियों को इसके पक्ष में प्रेरित किया।

कार्यक्रम के विशिष्ट वक्ता साकेत महाविद्यालय, अयोध्या के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. जनार्दन उपाध्याय ने कहा कि सृष्टि के विकास में मनुष्य इसलिए श्रेष्ठतम माना गया है क्योंकि उसे भाषा की अनूठी शक्ति मिली हुई है। यह शक्ति समाज मे आत्मीयता बढ़ाने का अचूक माध्यम है। दुनिया के सभी देश अपनी राष्ट्रभाषा को आत्मगौरव की भावना से देखना अतिआवश्यक मानते हैं। हम भारतीयों के लिए हिंदी की उन्नति तथा प्रतिष्ठा बढ़ाने का महान कर्तव्यबोध यही संदेश देता है। जॉर्ज ग्रियर्सन के भाषा सर्वेक्षण को केंद्र में रखते हुए व्याख्यायित किया। विभाग के समन्वयक डॉ. सुरेंद्र मिश्र ने अपने स्वागत भाषण में कुलपति और विशिष्ट वक्ता के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि हिंदी केवल एक भाषा नहीं है, अपितु वह भारतीय सांस्कृतिक जीवनधारा है जिसकी उपेक्षा और जिसके प्रति शिथिलता हमारे लिए सामाजिक उन्नयन देने वाली नहीं हो सकती। हमें सदैव इसके प्रति दृढ़ निष्ठा और विश्वास से अभिमुख रहने की आवश्यकता है। हिंदी हमारी राष्ट्रीय अस्मिता की संजीवनी है और देश की अन्य सभी भाषाएँ इसकी बहनें हैं। भाषा के स्तर पर राष्ट्रीय एकता का सर्वश्रेष्ठ माध्यम हिंदी ही है, उसके साथ भारत की समस्त भाषाओं को समरसता के सूत्र में सुगमता से जोड़ा जा सकता है।

शिक्षक सहयोगी डॉ0 शशांक मिश्र ने आये हुए अतिथियों का आभार ज्ञापन किया। साथ ही तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा निर्मित लगभग 60 हजार पारिभाषिक शब्दावलियों, केन्द्रीय हिंदी संस्थान आगरा द्वारा निर्मित भारतीय भाषाओं और हिंदी के अंतर्संबंधों पर निर्मित 40 कोशों के सन्दर्भ में, नई शिक्षा नीति में प्राइमरी स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा को उच्च शिक्षा तक क्यों नहीं किया जा सकता है? के सन्दर्भों में अपनी बात की। एम. ए. चतुर्थ सेमेस्टर की छात्रा ने 'अक्षर मंगलकारी है' शीर्षक कविता का पाठ किया। एम. ए. तृतीय सेमेस्टर की छात्रा सुश्री सौम्या मिश्र ने सरस्वती वन्दना किया। कार्यक्रम में कुलपति और विशिष्ट वक्ता का सम्मान पुस्तक भेंट कर किया गया, साथ ही विभागीय शिक्षक डॉ0 शशांक मिश्र ने अपनी प्रकाशित पुस्तक "साहित्य से संवाद : कुछ बुनियादी सरोकार" भी भेंट की। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 निखिल उपाध्याय ने किया। कार्यक्रम में संकायाध्यक्ष (कला) एवं मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह, प्रो0 नीलम पाठक, प्रो0 अनूप कुमार, प्रो. आर0के0 सिंह, प्रो0 जसवंत सिंह, डॉ0 संत शरण मिश्र, डॉ0 अंशुमान पाठक, शालिनी पाण्डेय, अंकित मिश्र एवं अन्य शिक्षकों सहित में सौम्या मिश्र, अल्पना तिवारी, अर्चना त्रिपाठी, विपुल उपाध्याय, करन वर्मा आदि विद्यार्थीगण उपस्थित रहे।

सिंधी अध्ययन केन्द्र द्वारा शिक्षक दिवस का आयोजन

05 सितम्बर। राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद, नई दिल्ली द्वारा स्थापित अमर शहीद संत कंवरराम साहिब सिंधी अध्ययन केन्द्र द्वारा शिक्षक दिवस का आयोजन डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय भवन में किया गया। शिक्षक दिवस के अवसर पर डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जीवन से प्रेरणा लेकर शिक्षा व्यवस्था का विकास हो ऐसा संदेश संत कंवरराम मिशन के अध्यक्ष आसूदा राम ने दिया।

सिंधी भाषा विभाग के समन्वयक डॉ0 सुरेन्द्र मिश्र ने कहा कि सिंधी भाषा व संस्कृति के विकास के लिए सक्रिय प्रयास करना होगा। राष्ट्रीय सिंधी मंच के अध्यक्ष जय प्रकाश क्षेत्रपाल, भक्त प्रह्लाद सेवा समिति के अध्यक्ष राज कुमार मोटवानी ने शिक्षकों को बधाई दी व आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थी के शिक्षण का व्यय संस्था द्वारा वहन करने की घोषणा की। कार्यक्रम में सिंधी भाषा के विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षण प्रदान करने हेतु रेखा मदनानी, अंजलि साधवानी व अंजलि माखेजा को सम्मान स्वरूप प्रशस्ति पत्र दिया गया।

सिंधी अध्ययन केन्द्र के निदेशक प्रो0 आर0के0 सिंह ने सिंधी भाषा व संस्कृति के विकास पर जोर देते हुए कहा कि जब हिन्द शब्द सिंध से उत्पन्न हुआ है तो सिंधी भाषा का विकास अवश्य होना चाहिए। हिंदी भाषा व साहित्य विभाग के प्रवक्ता डॉ0 निखिल उपाध्याय ने डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जीवन पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन करते हुए सिंधी भाषा विभाग के शिक्षक सुखराम दास ने शिक्षक दिवस के महत्व को बताया। कार्यक्रम में डॉ0 अनिल सिंह, सिंधी काउन्सिल ऑफ इंडिया के अध्यक्ष पवन जीवानी, समाजसेवी वेदस रातपाल, कपिल घासानी आलोक मदनानी, संगीता खटवानी, शालिनी राजपाल, सहित अन्य सदस्य उपस्थित थे।

शिक्षक–विद्यार्थी संवाद कार्यक्रम का आयोजन

14 सितम्बर। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) क्षेत्रीय अध्ययन केन्द्र, लखनऊ एवं अवध विश्वविद्यालय के इग्नू अध्ययन केन्द्र द्वारा "शिक्षक विद्यार्थी संवाद'' कार्यक्रम का ऑनलाइन आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य विशेषज्ञ इग्नू, नई दिल्ली के डॉ0 जी0 महेश ने समाजकार्य में स्नातक व परास्नातक कार्यक्रम में नामांकित इग्नू के विद्यार्थियों को उनके अध्ययन से सम्बन्धित महत्वपूर्ण जानकारियां प्रदान की। उन्होंने समाजकार्य विषय के बारे में बताते हुए कहा कि कोविड–19 की इस विषम परिस्थिति में समाजकार्य से जुड़े विद्यार्थियों को सरकार द्वारा जारी दिशा–निर्देशों को जनमानस तक पहुंचाकर जागरूक करना चाहिए। इस आपदा से निपटने के लिए विद्यार्थियों को निरन्तर शोध कार्य करते रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस वैश्विक महामारी में समाजकार्य से जुड़े सेवा प्रदाताओं का महत्व बढ़ा है।

इग्नू अध्ययन केन्द्र, लखनऊ के डॉ0 कीर्ति विक्रम सिंह ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि समाजकार्य एक ऐसा विषय है जिसे पढ़कर व्यक्ति न केवल रोजगार प्राप्त कर सकता है, बल्कि समाज के लिए भी अपना योगदान दे सकता है।

क्षेत्रीय निदेशक डॉ0 मनोरमा सिंह, ने समाजकार्य विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली द्वारा संचालित विभिन्न कार्यक्रमों के विषय में विस्तार से जानकारी दी और उनकी विशेषताओं से अवगत कराया।

डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय इग्नू अध्ययन केन्द के समन्वयक प्रो0 हिमांशु शेखर सिंह ने विषय पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इग्नू अध्ययन केन्द्र कोविड–19 पेनडेमिक के दौरान विद्यार्थियों को हर सम्भव सहायता मुहैया करायेगा।

महिला शिकायत एवं कल्याण प्रकोष्ठ का गठन

19 अगस्त। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के निर्देश पर विश्वविद्यालय में महिला शिकायत एवं कल्याण प्रकोष्ठ का गठन किया गया है। यह प्रकोष्ठ महिलाओं एवं छात्राओं के हितों की सुरक्षा एवं समान भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए किया गया है। जिससे वे अपनी भूमिका का निर्वहन सक्रिय रूप से कर सकें। कुलपति प्रो0 सिंह के निर्देश पर माइक्रोबायोलॉजी विभाग की प्रो0 तुहिना वर्मा को इस प्रकोष्ठ का समन्यवक एवं भौतिकी एवं इलेक्ट्रानिक्स विभाग की डॉ0 सिन्धु सिंह को उपसमन्वयक बनाया गया है। प्रकोष्ठ में सदस्य के रूप में आई0ई0टी0 की मनीषा यादव, डॉ0 महिमा चौरसिया, दृश्य कला विभाग की डॉ0 सरिता द्विवेदी एवं कार्यालय सहायक के रूप में नीलम मिश्र को नियुक्त किया गया है।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव उमानाथ ने बताया कि विगत दिनों कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने शिक्षिकाओं के साथ एक बैठक की थी। जिसमें शिक्षिकाओं ने विभिन्न समस्याओं से प्रो0 सिंह को अवगत कराया। उन्होंने उन सभी समस्याओं के निराकरण का आश्वासन दिया था।

शैक्षणिक गुणवत्ता पर ध्यान देने की जरूरतः कुलपति

18 अगस्त। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने विश्वविद्यालय के कौटिल्य प्रशासनिक भवन से विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों में शैक्षिक गतिविधियों को बनाये रखने के लिए संकायाध्यक्षों एवं विभागाध्यक्षों एवं प्राचार्यों के साथ ऑनलाइन बैठक की।

बैठक में कुलपति प्रो0 सिंह ने राजकीय एवं अनुदानित महाविद्यालयों के प्राचार्यों से अद्यतन शैक्षिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की। प्राचार्यों ने कुलपति से महाविद्यालयों में संचालित पाठ्यक्रमों की अवशेष परीक्षा कराने एवं सम्पन्न हो चुकी परीक्षा के परीक्षाफल घोषित कराये जाने का आग्रह किया। बैठक में कुलपति प्रो0 सिंह ने प्राचार्यों को आश्वस्त किया कि तैयारी चल रही है, शीघ्र ही जो परीक्षाफल तैयार है, उन्हें घोषित कर दिया जायेगा। विश्वविद्यालय की अवशेष परीक्षा एवं प्रोन्नत की प्रक्रिया उत्तर प्रदेश के उच्च शिक्षा विभाग के शासनादेश के आधार पर सम्पन्न कराई जायेगी।

बैठक में कुलपति प्रो0 सिंह ने बताया आपदा में शिक्षण गुणवत्ता पर ध्यान देने की जरूरत है। शैक्षिक गतिविधियां प्रभावित न हो, इसके लिए अपने यहां कार्यरत शिक्षकों से ई–कंटेंट तैयार कराकर इसे विश्वविद्यालय की साइट पर अपलोड कराये जाने की कार्यवाही सुनिश्चित करें, जिससे विद्यार्थियों को अध्ययन–अध्यापन में कोई असुविधा का सामना न करना पड़े। कुलपति प्रो0 सिंह ने ई–कंटेंट के सम्बन्ध में संकायाध्यक्षों एवं विभागाध्यक्षों एवं प्राचार्यों को निर्देश प्रदान करते हुए कहा कि

ई–लेक्चर को तैयार कर ओपन एक्सेस लिंक के साथ पाठ्यक्रमवार वेब पोर्टल पर उपलब्ध कराना है। इसके अतिरिक्त छात्रों से निरन्तर संवाद बनाये रखने के लिए उनके व्हाट्सअप एवं ई–मेल के साथ ऑनलाइन क्लास भी सुनिश्चित करें। बैठक में कुलसचिव उमानाथ, उपकुलसचिव विनय कुमार सिंह, समस्त संकायाध्यक्ष, विभागाध्यक्ष, राजकीय एवं अनुदानित महाविद्यालयों के प्राचार्य उपस्थित रहे।

निर्माण एवं आन्तरिक गुणवत्ता प्रकोष्ठ का गठन

18 अगस्त। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के अनुमोदन पर परिसर में निर्माण एवं आन्तरिक गुणवत्ता प्रकोष्ठ का गठन कर दिया गया है।

यह प्रकोष्ठ परिसर के निर्माण एवं गुणवत्ता की निगरानी रखेगा। विश्वविद्यालय के कुलसचिव उमानाथ ने बताया कि इस प्रकोष्ठ में इतिहास एवं संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के प्रो0 एम0पी0 सिंह को अध्यक्ष बनाया गया है। सदस्य के रूप में एम0बी0ए0 विभाग के प्रो0 शैलेन्द्र कुमार वर्मा एवं आई0ई0टी0 के निदेशक प्रो0 रमापति मिश्र को नामित किया गया है।

राधाकृष्णन के आदर्शों को आत्मसात् करने की जरूरत : डॉ0 चतुर्वेदी

05 सितम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग में डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिन पर छात्रों ने वर्चुअल प्लेटफॉर्म से शिक्षक दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विभाग के समन्वयक डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी ने छात्रों से कहा कि सर्वपल्ली राधाकृष्णन के आदर्शों को आत्मसात् करने की जरूरत है। अनुशासित जीवन जी कर एक अच्छे नागरिक बनने का प्रयास करें। राधाकृष्णन शिक्षकों एवं छात्रों के हितों का सदैव ध्यान दिया करते थे।

विभाग के शिक्षक डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा ने कहा कि शिक्षक की पहचान छात्रों से होती है। किसी भी संस्थान की जिम्मेदारी शिक्षकों के साथ विद्यार्थियों की भी होती है। राष्ट्र की उन्नति के लिए शिक्षकों के मार्गदर्शन पर चलकर छात्र देश का नवनिर्माण कर सकते हैं। डॉ0 आर0एन0 पाण्डेय ने बताया कि स्वस्थ्य समाज का निर्माण शिक्षक और विद्यार्थी मिलकर करते हैं। दोनों का यह दायित्व है कि भविष्य की नींव को मजबूत करने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहें। डॉ0 अनिल कुमार विश्वा ने बताया कि शिक्षक एवं छात्र का रिश्ता अनोखा होता है। छात्र शिक्षक के बताए मार्ग पर चलकर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

छात्र–छात्राओं ने भी शिक्षक दिवस पर अपने जीवन में शिक्षकों के महत्व का रेखांकन किया एवं आर्शीवाद प्राप्त किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ सरस्वती वंदना एवं कुलगीत से किया गया। उसके उपरांत विद्यार्थियों ने सर्वपल्ली राधा कृष्णन के जीवन पर एक वृत्तचित्र की प्रस्तुति की। कार्यक्रम का संचालन स्वाति खरे ने किया। इस अवसर पर साक्षी, रजनीश, सौरभ, इशिता, प्रांजलि, महेश, आशुतोष, धर्मेश, सर्वेश सहित अन्य विद्यार्थियों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

•डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के बी0एस0सी0 भाग–दो, मुख्य परीक्षा वर्ष–2020 का परीक्षाफल 01 सितम्बर, 2020 को घोषित किया गया।

• डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के बी0एस0सी0 भाग–तीन, मुख्य परीक्षा वर्ष–2020 का परीक्षाफल 28 अगस्त, 2020 को घोषित किया गया।

•डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के निर्देश पर प्रत्येक शनिवार को परिसर एवं विभागों में स्वैच्छिक श्रमदान एवं सफाई अभियान चलाने का निर्णय लिया गया।

•डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के परास्नातक पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए काउंसिलिंग 06–13 अक्टूबर, 2020 को होगी।

नई शिक्षा नीति भारत को अग्रणी देशों के समकक्ष ले आयेगीः कुलपति

14 सितम्बर। हिन्दी दिवस पर डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 (उच्च शिक्षा) विषय पर शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के लिए एक हस्तलिखित निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई।

प्रतियोगिता के आरम्भ में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने व्यवस्था का जायजा लिया। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर प्रतियोगिता कराने का उद्देश्य अधिक से अधिक लोगों में जागरूकता लाना है। इस नीति के द्वारा देश में स्कूल एवं उच्च शिक्षा में परिवर्तनकारी सुधारों की अपेक्षा की गई है। कुलपति ने बताया कि भारतीय शिक्षा प्रणाली में बदलाव के लिए जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति आई है यदि उसका क्रियान्वयन सफल तरीके से किया जाए तो यह नीति भारत को विश्व के अग्रणी देशों के समकक्ष ले आयेगी। निबन्ध प्रतियोगिता आयोजन के सम्बन्ध में विश्वविद्यालय के कुलसचिव उमानाथ ने बताया कि निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं 04 सांत्वना पुरस्कार रखे गये है। इसके आयोजन एवं मूल्यांकन के लिए कुलपति प्रो0 सिंह के निर्देशन में एक समिति का गठन किया गया है। इसमें बायोकमेस्ट्री विभाग की प्रो0 नीलम पाठक को समिति का अध्यक्ष बनाया गया। निर्णायक मंडल के सदस्यों में माइक्रोबायोलॉजी विभाग की प्रो0 तुहिना वर्मा, पर्यावरण विभाग के डॉ0 विनोद चौधरी, इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के डॉ0 डी0एन0 वर्मा, जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग के डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, एम0एड0 विभाग की डॉ0 शशिकला सिंह एवं आई0ई0टी0 की मनीषा यादव रही। समिति के सदस्यों द्वारा निबन्ध प्रतियोगिता का मूल्यांकन कर कुलपति को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करेंगे। निबन्ध प्रतियोगिता के आयोजन एवं मूल्यांकन समिति की अध्यक्ष प्रो0 नीलम पाठक ने बताया कि कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के मार्गदर्शन में यह प्रतियोगिता करायी गई है। प्रतियोगिता के लिए कुल एक घण्टे का समय दिया गया जिसमें 30 कर्मचारियों ने प्रतिभाग किया।

प्रो0 नीलम पाठक बनीं अधिष्ठाता छात्र कल्याण

18 अगस्त। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने परिसर की शिक्षिकाओं को समान भागादारी प्रदान करते हुए बायोकमेस्ट्री विभाग की प्रो0 नीलम पाठक को अधिष्ठाता छात्र कल्याण बनाया।

विगत दिनों कुलपति प्रो0 सिंह ने परिसर के अधिकारियों, संकायाध्यक्षों, विभागाध्यक्षों एवं शिक्षिकाओं के साथ एक बैठक की थी। बैठक में शिक्षिकाओं ने कुलपति प्रो0 सिंह से आग्रह किया था कि परिसर की विभिन्न समितियों में शिक्षिकाओं की समान भागीदारी पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इसी को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 सिंह ने प्रो0 नीलम पाठक को अधिष्ठाता छात्र कल्याण की जिम्मेदारी प्रदान की है।

महात्मा गांधी के बताए मार्ग पर चलने से हमारी बौद्धिक एवं आध्यात्मिक उन्नति होगी : कुलपति

15 अगस्त । डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में 74 वां स्वतंत्रता दिवस पर सोशल डिस्टेसिंग का अनुपालन करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने मुख्य परिसर, नवीन परिसर एवं कुलपति आवास पर झंडारोहण किया। 74 वें स्वतंत्रता दिवस पर शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्रों को सम्बोधित करते हुए कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि आज के दिन हमें देश के वीर सपूतों को नमन करना चाहिए जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपना सबकुछ न्यौछावर कर दिया। महात्मा गांधी ने हमें सत्य, अहिंसा एवं प्रेम के आदर्शों पर चलना सिखाया। उनके बताए मार्ग पर चलने से हमारी बौद्धिक एवं आध्यात्मिक उन्नति होगी। कुलपति ने कहा कि लौहपुरूष सरदार वल्लभभाई पटेल का योगदान भी हमें नहीं भूलना चाहिए जिन्होंने देश को एकता के सूत्र में बांधा।

प्रो0 सिंह ने कहा कि वर्तमान में देश के प्रधानमंत्री द्वारा चलाये गये कौशल भारत, आत्मनिर्भर भारत, भ्रष्टाचार मुक्त भारत अभियान का हम सबको हिस्सा बनना चाहिए, जिससे देश के प्रगति में हम सभी अपना योगदान दे सके। कुलपति ने नई शिक्षा नीति पर बोलते हुए कहा कि हमें विद्यार्थियों का कल्याण करने के लिए तत्पर होना है। डॉ0 राममनोहर लोहिया के विचारों को आत्मसात् करना है। हम राम की नगरी में है, यह हमारा सौभाग्य है। हमें भगवान श्रीराम के मर्यादित चरित्र का अनुसरण करना चाहिए। कुलपति ने कहा कि विद्यार्थी एवं शिक्षक विश्वविद्यालय के अभिन्न अंग हैं। विद्यार्थी हमारी धरोहर हैं एवं देश का भविष्य है। शिक्षकों का दायित्व बनता है कि विद्यार्थियों को श्रेष्ठ शिक्षा दें ताकि वे अपने विश्वविद्यालय एवं देश का नाम रोशन कर सकें। आज के दिन हर सभी भारतीय नागरिकों को संकल्प लेना चाहिए कि आने वाले समय में ऐसे कार्य करे जिससे देश का मान और अधिक बढ़ सके।

झंडारोहण के पूर्व कुलपति प्रो0 सिंह ने डॉ0 लोहिया की प्रतिमा पर माल्यार्पण के उपरांत लोहिया पार्क में गोल्डेन चंपा का वृक्षारोपण किया। कार्यक्रम में परिसर की छात्रा मानसी श्रीवास्तव ने ऐ वतन वतन मेरे, आबाद रहे तू... और मासूम जेहरा ने तेरे मिट्टी में मिल जावां... देशभक्ति के गीतों को गाकर सभी भाव–विभोर कर दिया। सुहास सरल एवं अभिनव तिवारी ने स्वरचित देश भक्ति रचनाएं प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो0 आर0के0 तिवारी द्वारा किया गया। इस अवसर पर वित्त अधिकारी धनन्जय सिंह, कुलसचिव उमानाथ, उपकुलसचिव विनय कुमार सिंह, मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह, प्रो0 अशोक शुक्ला, प्रो0 चयन कुमार मिश्र, प्रो0 राजीव गौड़, प्रो0 आशुतोष सिन्हा, प्रो0 हिमांशु शेखर सिंह, प्रो0 के0के वर्मा, प्रो0 एमपी सिंह, प्रो0 विनोद श्रीवास्तव, प्रो0 शैलेन्द्र वर्मा सहित बड़ी संख्या में शिक्षक एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

नई शिक्षा नीति की स्वीकार्यता के लिए सामूहिक प्रयास करना होगा : डॉ0 नीलिमा

27 अगस्त । डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय एवं स्टूडेंटस फॉर होलिस्टिक डेवलपमेंट इन ह्यूमैनिटी के संयुक्त संयोजन में नई शिक्षा नीतिः सम्भावनाएं और चुनौतियां विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार के उद्घाटन सत्र में अतिथियों का स्वागत एवं अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि नई शिक्षा नीति–2020 युगांतरकारी परिवर्तन का एक दस्तावेज है। इसका ईमानदारी से क्रियान्वयन देश की शिक्षा व्यवस्था को उच्चतम सोपान तक ले जाने में सक्षम है। नई शिक्षा नीति देश के विकास में बड़ा योगदान कर सके, इसके लिए सभी की भागीदारी आवश्यक है। नई शिक्षा नीति देश को आत्मनिर्भरता की ओर ले जाने में सक्षम है। वैश्विक स्पर्धा में भारत खड़ा हो सके, इसके लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा नीति में जनभागीदारी हो। हर स्तर पर बौद्धिक नेतृत्व की जिम्मेदारी है कि वह पाठ्यक्रमों की संरचना में सहयोग करें। नई शिक्षा नीति में 27 बिंदुओं को समावेशित किया गया है। गणित, विज्ञान एवं कला, सभी पर समानरूप से नई शिक्षा नीति में जोर दिया गया है। नई शिक्षा नीति में विदेशों में शैक्षिक परिसर की स्थापना और राष्ट्रीय भाषा को अपनाने पर बल दिया गया है। नेशनल रिसर्च फाउंडेशन की स्थापना का उद्देश्य शिक्षा की सभी तक पहुंच और भावी पीढ़ी को शिक्षा दिलाना है।

वेबिनार की मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश सरकार में उच्च शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री डॉ0 नीलिमा कटियार ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति संधान पूर्णता और सभी की भागीदारी सुनिश्चित करेगी। वर्तमान सरकार पूरी जवाबदेही के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन कर रही है। जिम्मेदारी विचारधारा से

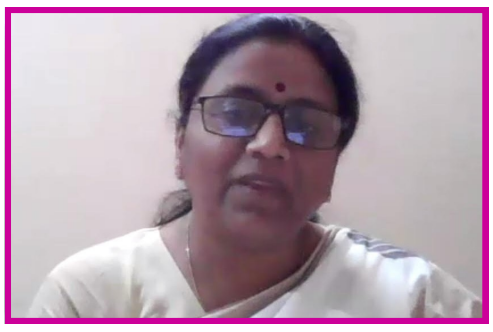

आती है इसे सरकार की नीतियों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। हमारे लिए देश का विकास जरूरी है। समूची दुनिया एक ऐसे नकारात्मक वातावरण में है फिर भी हमें वैश्विक सोच को बदलना होगा। आपदा में संभावनाओं की तलाश करनी है जिससे सभी नागरिकों में वैश्विक सोच पैदा हो सके। महापुरुषों ने अपने अनुभवों से वास्तविक शिक्षा के दर्शन कराए हैं, नई नीति में उनका प्रस्तुतीकरण किया गया है। सामाजिक ढांचा अर्हता के इर्द–गिर्द सिमट कर रह गया है जबकि अर्हता सीमित है और क्षमता असीमित। नई शिक्षा नीति की स्वीकार्यता के लिए सामूहिक प्रयास करना होगा।

वेबिनार में विशिष्ट अतिथि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष प्रो0 डी0पी0 सिंह ने कहा कि 21 वीं सदी की यह पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति है। इस नीति में तार्किकता, नैतिकता, संवेदनशीलता और जागृति है। रोजगारमूलक होने के साथ–साथ मानवीय मूल्यों से ओतप्रोत है। इस शिक्षा नीति के माध्यम से ऐसी युवा पीढ़ी का निर्माण होगा जो अपनी संस्कृति से जुड़ी होगी। हमारे विद्यार्थी वैश्विक नागरिक भी बने। विश्व में हमारे भारत की जो पहचान है उस पहचान को बनाये रखते हुए उसे विस्तार दे। उन्होंने कहा कि यह शिक्षा नीति बहुविषयक शिक्षा एवं स्किल डेवलपमेंट पर जोर देती है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जिससे चरित्र निर्माण हो और बौद्धिक विकास हो। मनुष्य में अन्त. र्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति का नाम ही शिक्षा है।

नई शिक्षा नीति की ड्राफ्टिंग कमेटी के सदस्य प्रो0 के0 रामचन्द्रन ने कहा कि स्नातक और परास्नातक के विद्यार्थियों के लिए सीखने के लिए विशेष प्रयास करना होता है। छात्रों की विविधता हमारी शक्ति है, उसका उपयोग करना हमारे लिए आवश्यक है। हमें छात्रों की क्षमता को पहचान कर उन्हें गति देने की आवश्यकता है। हमें एक ऐसी तकनीक विकसित करनी है कि जिससे छात्र–छात्राओं की मेधा को परखा जा सके और उनका सदुपयोग राष्ट्र के निर्माण में हो सके। अन्य वक्ताओं में प्रो0 किरन हजारिका, सदस्य विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने नई शिक्षा नीति को देश की सुदृढ़ शिक्षा व्यवस्था के लिए आवश्यक बताया। दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो0 एस0पी0 सिंह ने कहा कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का बहुत बड़ा लक्ष्य है। यह विद्यार्थी, शिक्षक एवं सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए सर्व समावेशी है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सदस्य प्रो0 नागेश ठाकुर ने नई शिक्षा नीति के तकनीकी पहलुओं पर चर्चा करते हुए कहा कि शोद्यार्थी अपने ही देश में गुणवत्तापरक शोध कर सकते है। प्रो0 मनप्रीत मानस, पूर्व निदेशक ए0आई0सी0टी0ई0 ने बताया कि इस शिक्षा नीति में कई अहम कदम उठाए गये है जो निश्चित ही देश के विकास में सहायक होंगे। टी0आई0एस0एस0 की अध्यक्ष प्रो0 मधुश्री शेखर ने बताया के नई शिक्षा नीति का क्रियान्वयन करते हुए हमें अपने विश्वविद्यालयों एवं शैक्षिक संस्थाओं को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर श्रेष्ठ साबित करना होगा।

वेबिनार के समन्वयक प्रो0 एस0एन0 शुक्ल ने बताया कि लगभग 34 वर्षों के अंतराल के बाद नई शिक्षा नीति का आगमन हुआ है। निश्चित ही यह नीति भारत को पुनः विश्वगुरू के पद पर स्थापित करेगी। इसमें देश भर के लगभग 700 शिक्षाविद्व एवं प्रतिभागी ऑनलाइन जुड़े। कार्यक्रम का संचालन आयोजन सचिव डॉ0 गीतिका श्रीवास्तव ने किया। धन्यवाद ज्ञापन सह संयोजक प्रो0 फारूख जमाल ने किया। तकनीकी सहयोग मनीषा यादव, पारितोष त्रिपाठी, राजीव कुमार, रमेश मिश्र ने प्रदान किया। इस अवसर पर प्रो0 अशोक शुक्ल, प्रो0 शैलेन्द्र वर्मा, डॉ0 अमित कुशवाहा एवं प्रो0 रमापति मिश्र सहित बड़ी संख्या में प्रतिभागी जुड़े रहे।